इकाई 9 बैजन्तिया (बिजेण्टाइन), ईसाई और इस्लामी सभ्यताएँ

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद, आप इस योग्य हो जाएँगे कि आप :

- बिजेण्टाइन के अर्थ और इसके विकास को समझ सकें;
- आधुनिक विश्व के लिए बिजेण्टाइन के योगदान को जान सकें;
- ईसाई सभ्यता और इसके प्रसार पर चर्चा कर सकें; और
- इस्लामी सभ्यता और इस्लाम के विस्तार के बारे में जान सकें।

9.1 प्रस्तावना

पिछली इकाइयों में हमने सभ्यता के अर्थ और अभिलक्षणों, सामाजिक दशाओं और पर्यटन, प्रारम्भिक सभ्यताओं के उत्थान-पतन और चीन की सभ्यता पर विस्तृत रूप से चर्चा की है। वर्तमान इकाई में हम बिजेण्टाइन (बैजन्तियाई) और इसके विकास, बिजेण्टाइन के योगदान, ईसाई सभ्यता और इस्लामी सभ्यता पर विस्तृत चर्चा करेंगे।

9.2 बिजेण्टाइन

"बिजेण्टाइन" शब्द की उत्पत्ति बिजेण्टियम शब्द से हुई है जिसका प्रयोग बाइजस नामक व्यक्ति द्वारा स्थापित की गयी एक प्राचीन यूनानी बस्ती को निर्दिष्ट करने के लिए किया जाता था। यह बास्पोरस जलसन्धि के पास यूरोप की तरफ अवस्थित था। बास्पोरस

जलसन्धि का प्रयोग एशिया और यूरोप के बीच व्यापार के लिए यातायात के एक महत्वपूर्ण बिन्दु के रूप में किया जाता था। रोमन सम्राट कांस्टेण्टाइन प्रथम द्वारा 330 ई. में न्यू रोम की स्थापना करने के लिए इसी स्थल का चुनाव किया गया था और इस कारण इस नगर को लोकप्रियता मिली। इसकी राजधानी कांस्टैण्टीनोपल (कुस्तुनतुनिया) थी। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि कांस्टेण्टाइन ही वह सम्राट था जिसने ईसाइयत स्वीकार की थी और इसे रोम का आधिकारिक धर्म घोषित किया था। कांस्टैण्टीनोपल के निवासियों को क्रिश्चियन यानी ईसाई कहा गया जबकि पूर्वी रोमन साम्राज्य का शेष भाग रोमवासियों की भूमि के रूप में ही लोकप्रिय बना रहा। कांस्टेण्टाइन ने एकीकृत रोमन साम्राज्य पर शासन किया था लेकिन यह शासन लम्बे समय तक नहीं चल सका क्योंकि उसकी मृत्यु के बाद 337 ई. तक यह साम्राज्य दो भागों में विभाजित हो गया : पूर्वी और पश्चिमी। उसके उत्तराधिकारी वैलेण्टाइनियन प्रथम ने 364 ई. में पश्चिमी हिस्से पर नियन्त्रण स्थापित कर लिया जबकि उसके भाई वैलेन्स को पूर्व का प्रभार दिया गया।

आने वाली कुछ शताब्दियों में इन दोनों नगरों का दुर्भाग्य शुरू हुआ क्योंकि पश्चिमी हिस्से को जर्मन आक्रमणकारियों के लगातार होने वाले हमले झेलने पड़े। जर्मन आक्रमणकारियों ने इन नगरों के शासकों को बुरी तरह परास्त कर दिया और सिर्फ इटली को छोड़कर समस्त भूभाग पर अधिकार कर लिया। इटली पर रोमनों का शासन बना रहा। लेकिन 476 ई. तक ओडेसर नामक एक बर्बर द्वारा अन्तिम रोमन सम्राट रोमुलस आगस्टस को परास्त कर देने के कारण रोम की आशा की अन्तिम किरण भी समाप्त हो गयी। हालाँकि, रोमन साम्राज्य का पूर्वी भाग सुरक्षित बना रहा और इसको क्षति नहीं पहुँचायी जा सकी क्योंकि इसकी विशिष्ट भौगोलिक अवस्थिति इसकी सुरक्षा और संरक्षा को सुनिश्चित करती थी। पूर्वी भाग की कम सुभेद्यता के लिए केवल विशिष्ट भौगोलिक स्थिति ही जिम्मेदार नहीं थी, बल्कि सशक्त प्रशासन और अत्यधिक समृद्धि के साथ-साथ आन्तरिक राजनीतिक स्थायित्व का भी इसमें योगदान था। पूर्वी सम्राटों ने आर्थिक संसाधनों का प्रबन्धन भी कुशलतापूर्वक किया था और बाहरी आक्रमण से निपटने के लिए निवासीजनों पर उनका नियन्त्रण भी अधिक था। इसी कारण बिजेण्टियम का अस्तित्व शताब्दियों तक बना रहा। यहाँ तक कि रोमन साम्राज्य के पतन के बाद भी इसका अस्तित्व बना रहा। रोमन कानून और उनकी राजनीतिक व्यवस्था को तो इन्होंने कमोबेश यथारूप स्वीकार कर लिया था किन्तु अपनी आधिकारिक भाषा उन्होंने लैटिन को बनाया। हालाँकि यूनानी भाषा भी प्रचलित थी और विद्यार्थी यूनानी इतिहास, संस्कृति और साहित्य का भी अध्ययन करते थे। बिजेण्टेयिम में 451 ई. में ईसाइयत और चाल्सडन की परिषद को अपनाया गया। ईसाइयत पाँच बड़े-बड़े पादरी-कार्यालयों में विभाजित थी, जिनके नाम रोम, कांस्टैण्टीनोपल, सिकन्दरिया, एण्टियोक और यरुशलम थे। पाँच पादरियों की नियुक्ति की गयी थी ताकि प्रत्येक कार्यालय को सँभाला जा सके। यद्यपि सातवीं सदी में इस्लामिक साम्राज्य ने सिकन्दरिया, एण्टियोक और यरुशलम पर अधिकार कर लिया लेकिन बिजेण्टियन सम्राट कांस्टैण्टीनोपल के पद को बनाए रखने में सफल रहा और वह पूर्वी ईसाइयों का आध्यात्मिक नेता बना।

9.2.1 जस्टीनियन प्रथम

जस्टीनियन प्रथम बिजेण्टाइन साम्राज्य का प्रथम शासक था। उसने 527 ई. से 565 ई. तक शासन किया था। उसके शासनकाल में जस्टीनियन सेना ने पश्चिमी रोमन साम्राज्य के भूक्षेत्रों पर अधिकार कर लिया था। उसका साम्राज्य उत्तरी अफ्रीका तक विस्तृत था। उसे अनेक भव्य इमारतें बनवाने का श्रेय जाता है; जैसे - पवित्र ज्ञान का गिरजाघर या सेण्ट सोफिया का गिरजाघर। रोमन कानून में सुधार करने और उसे संहिताबद्ध करने का श्रेय भी उसे दिया जाता है। उसने बिजेण्टाइन की एक विधि संहिता की स्थापना की जिसके

कारण बिजेण्टाइन को राज्य की आधुनिक अवधारणा के अनुसार ढलने में सहायता मिली। युद्धों के कारण अपने जीवन के अन्तिम चरण में उसने बिजेण्टाइन को गम्भीर वित्तीय संकट में डाल दिया और साम्राज्य को चलाने के लिए उसके उत्तराधिकारियों को बिजेण्टाइन के मूल निवासियों पर भारी कर लगाने के लिए विवश होना पड़ा। सातवीं और आठवीं शताब्दी के दौरान फारसी और दासजनों द्वारा किए गए कठोर आक्रमण तथा कमजोर आर्थिक स्थिति के साथ-साथ राजनीतिक अस्थायित्व ऐसे प्रमुख कारण रहे जिनके चलते साम्राज्य का पतन हो गया। शताब्दी के अन्त तक इस्लामी ताकतों ने बिजेण्टाइन से सीरिया, मिस्र और उत्तरी अफ्रीका का नियन्त्रण छीन लिया। 730 ई. तक आते-आते बिजेण्टाइन सम्राटों ने एक आन्दोलन चलाया जो धार्मिक चित्रों की उपासना का निषेध करता था। यहाँ तक कि, उन्होंने ऐसे चित्रों की पवित्रता के विचार को भी खारिज कर दिया लेकिन 843 ई. में सम्राट मिशेल तृतीय के शासनकाल में गिरजाघर की परिषद ने ऐसे प्रतिबन्धों को खारिज कर दिया और धार्मिक चित्रों के प्रदर्शन की अनुमति प्रदान कर दी।

9.2.2 दसवीं और ग्यारहवीं शताब्दी का काल

दसवीं शताब्दी के अन्तिम और ग्यारहवीं शताब्दी के प्रारम्भिक समय को इतिहासकारों ने बिजेण्टाइन साम्राज्य के स्वर्णकाल के रूप में व्याख्यायित किया है। बेसिल के शासन के दौरान मकदूनियाई राजवंश को अत्यधिक स्वतन्त्रता हासिल थी। बिजेण्टियन लोगों का व्यापार और वाणिज्य पर और प्रचुर धन-सम्पदा पर अच्छा नियन्त्रण था। यहाँ तक कि किसी भी बिजेण्टियन शासक के समय की तुलना में इस समय बिजेण्टियन लोगों की अन्तरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा भी अधिक थी। यह दौर बिजेण्टियन कला और बिजेण्टियन पच्चीकारी के संरक्षण के लिए भी जाना जाता है। इस दौर के शासकों ने प्राचीन यूनानी इतिहास और साहित्य को बढ़ावा देने के साथ-साथ गिरजाघरों, महलों और अन्य सांस्कृतिक संस्थाओं की मरम्मत और उन्हें बहाल करने पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। यूनानी को राज्य की आधिकारिक भाषा का दर्जा प्रदान किया जाना और माउण्ट एथोस को संन्यास के एक केन्द्र के रूप में स्थापित किया जाना इस काल की प्रमुख उपलब्धियों में शामिल हैं। हालाँकि बिजेण्टाइन मिशनरियों ने स्लाव लोगों के बीच ईसाइयत का प्रचार-प्रसार और धर्मान्तरण करने के लिए केन्द्रीय और पूर्वी बाल्कन तथा रूस में प्रवेश किया।

9.2.3 धर्मयुद्धों का प्रारम्भ

ग्यारहवीं शताब्दी के अन्त तक आते-आते धर्मयुद्धों का प्रारम्भ हो गया। धर्मयुद्ध का तात्पर्य मुस्लिमों के विरुद्ध यूरोपीय ईसाइयों द्वारा लड़े गए पवित्र युद्धों से है। इन पवित्र युद्धों के लिए प्रारम्भ में सम्राट एलेक्सियस प्रथम उत्तरदायी था क्योंकि जब वह पश्चिम में तुर्कों के विरुद्ध आगे बढ़ा तो परिणामस्वरूप पोप अर्बन द्वित्तीय द्वारा पवित्र युद्ध की घोषणा कर दी गयी। 1071 ई. में हुई मेंजीकर्ट की लड़ाई ने अनातोलिया में तुर्कों के बसने का मार्ग खोल दिया। कोमनेनियाई पुनर्स्थापना के युग में साम्राज्य ने अपनी शक्ति दुबारा हासिल कर ली और बारहवीं शताब्दी तक आते-आते कांस्टैण्टीनोपल (कुस्तुनतुनिया) यूरोप का सर्वाधिक समृद्ध और सम्पत्तिशाली नगर बन गया। चौथे धर्मयुद्ध के दौरान 1204 ई. में कांस्टैण्टीनोपल को बुरी तरह लूटा गया। इसका परिणाम यह हुआ कि साम्राज्य बिजेण्टियन-यूनानी और लैटिन क्षेत्रों में विभाजित हो गया। 1261 ई. में कांस्टैण्टीनोपल के निष्कर्षात्मक सुधार के बावजूद, बिजेण्टाइन साम्राज्य का अस्तित्व अगली दो शताब्दियों तक एक छोटे-से प्रतिद्वन्द्वी राज्य की तरह ही रहा। चौदहवीं और पन्द्रहवीं शताब्दी के दौरान इससे सटे भूभागों पर ऑटोमन साम्राज्य ने बलपूर्वक कब्जा कर लिया। 1453 ई. में ऑटोमन साम्राज्य ने कांस्टैण्टीनोपल को जीतकर लूटा और बिजेण्टाइन साम्राज्य का अन्त हो गया। हालाँकि बिजेण्टाइन साम्राज्य के अन्तिम राज्य ट्रेबीजोंड के साम्राज्य पर ऑटोमन लोगों ने 1461 ई.

में अधिकार कर लिया और इस प्रकार सम्पूर्ण बिजेण्टाइन साम्राज्य ऑटोमन लोगों के अधिकार में आ गया था।

यद्यपि बिजेण्टाइन पर ऑटोमन का पूर्णरूपेण कब्जा हो गया था लेकिन बिजेण्टाइन की संस्कृति; जैसे – कला, साहित्य इत्यादि सुदीर्घ काल तक अस्तित्व में बनी रही और इसका प्रभाव रूस, रोमानिया, बुल्गारिया, सर्बिया और ग्रीस जैसे देशों पर भी महसूस किया गया।

9.2.4 बिजेण्टाइन का योगदान

आधुनिक विश्व में बिजेण्टाइन के योगदान का यदि हम विश्लेषण करें तो हमें बिजेण्टाइन लोगों द्वारा निष्पादित की गयी गतिविधियों और प्रयोगों की एक श्रृंखला मिलती है जिन्होंने आने वाले समय के लिए तकनीकी प्रगति की नींव डाली। बिजेण्टाइन विज्ञान प्राचीन दर्शन और अध्यात्म से सम्बद्ध था। मिलेटस के यूनानी गणितज्ञ आइसीडोर ने आर्कमिडीज के कार्यों को संकलित किया। गणितज्ञ लियो ने एक प्रकाशीय टेलीग्राफ का विकास किया था जो संकेत देने वाली मशालों की एक व्यवस्था की तरह था। इसका प्रयोग शत्रुओं द्वारा धावा बोले जाने से बहुत पहले ही सावधान कर देने के लिए खतरे की एक घण्टी की तरह किया जाता था। लटकते हुए यानी पेण्डेण्टिव स्थापत्य की अवधारणा का विकास बिजेण्टाइन लोगों द्वारा किया गया था। जटिल दाँतेदार पहियों से युक्त सौर घड़ी, एण्टीकाइथेरा यान्त्रिकी को लागू करना तथा यान्त्रिक बारीकियों से परिपूर्ण खिलौने उन उच्च कौशलों के कुछ उदाहरण हैं जिन्हें बिजेण्टाइन लोगों द्वारा संरक्षण प्रदान किया गया था। ऐसी यान्त्रिक युक्तियाँ अत्यधिक उत्कृष्ट और परिष्कृत हुआ करती थीं और पहली ही नजर में ये आगन्तुक लोगों पर प्रभाव जमा लेती थीं। बिजेण्टाइन लोगों ने जल की शक्ति के विज्ञान (हाइड्रॉलिक्स) और इसके उपयोग की भी खोज की थी क्योंकि अनाज पीसने के लिए, जलशक्ति का प्रयोग करते हुए, समुद्री जहाज की चक्की का उपयोग करना उन्होंने ही प्रारम्भ किया था।

बीमार लोगों को चिकित्सकीय सहायता और उपचार उपलब्ध कराने में भी बिजेण्टाइन लोग श्रेष्ठ थे। जिस स्थान पर उपचार उपलब्ध कराया जाता था, उसे अस्पताल कहा जाता था। उन्हें मूत्र-विश्लेषण (यूरोस्कोपी) के माध्यम से रोग की पहचान करने का ज्ञान था क्योंकि थियोफिलस प्रोटोस्पाथारियस नामक एक चिकित्सक ने इसका प्रयोग रोगों के निदान के लिए उस समय किया था, जब किसी सूक्ष्मदर्शी का आविष्कार नहीं हुआ था। रोग-निदान की यह तकनीक सम्पूर्ण यूरोप में फैली। वियना डियोस्कोरिडेस, एजिना के पॉल और निकोलस माइरेप्सोस जैसे विख्यात बिजेण्टेनियाई चिकित्सकों ने अपने चिकित्सा सम्बन्धी कार्यों के रूप में उल्लेखनीय योगदान दिया था और विषहर औषध की खोज भी की थी।

सैन्य क्षेत्र में बिजेण्टाइन लोगों ने अपने कौशलों का प्रयोग ग्रेनेड की खोज करने में किया था। कीलों, काँच और विस्फोटकों से भरे हुए मिट्टी के बर्तनों का प्रयोग भी इस उद्देश्य के लिए किया जाता था। बिजेण्टाइन साहित्य में ऐसे यन्त्रों का भी उल्लेख है जिन्हें हाथ से पकड़कर रखा जाता था और इससे अग्नि-ज्वालाएँ फेंकी जाती थीं। बिजेण्टाइन लोगों ने किलों और दुर्गबन्दियों को ध्वस्त करने में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों का विकास करने में भी हाथ आजमाया था। इससे तोपों का विकास करने के लिए एक आधार मिला। बिजेण्टाइन के पतन-काल के दौरान ट्रेबीजोंड नगर का विकास खगोलिकी और गणित सीखने के एक लोकप्रिय केन्द्र के रूप में हुआ। इसके साथ ही विद्वान लोग यहाँ औषधियों का अध्ययन करने के लिए भी आकृष्ट हुए।

बोध प्रश्न 1

1) बिजेण्टाइन लोग कौन थे? उनका उद्‌भव कहाँ हुआ था?

....

....

....

....

....

2) "धर्मयुद्धों के प्रारम्भ" पर एक टिप्पणी लिखिए।

....

....

....

....

....

3) बिजेण्टाइन लोगों के तकनीकी योगदान का वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

....

9.3 ईसाई सभ्यता

ईसाई सभ्यता में ईसाई धर्म और ईसाई चर्च का, जीसस के समय से लेकर आज तक का, इतिहास शामिल है। जहाँ तक ईसाइयत का सम्बन्ध है, यह एक ऐसा धर्म है जो एक ईश्वर की उपासना में विश्वास रखता है। इस धर्म के मुख्य सिद्धान्त जीसस क्राइस्ट के जीवन, जन्म, मृत्यु, पुनर्जीवन और उनकी शिक्षाओं में निहित हैं। एक्ट्स ऑफ दि एपॉसल्स नामक पुस्तक के अनुसार, सर्वप्रथम ईसाई ऐसे यहूदी लोग थे जिन्होंने इस धर्म को चाहे जन्म से या धर्मान्तरण से स्वीकार किया था और इतिहास में इन प्रारम्भिक ईसाइयों को यहूदी ईसाई कहा जाता है। ईसाई धर्म के सन्देश का प्रचार-प्रसार प्रारम्भ में अरामाइक भाषा में हुआ लेकिन यह यूनानी भाषा में भी फैला। मध्यकाल में ईसाइयत उत्तरी यूरोप और रूस तक विस्तृत थी। अन्वेषण काल तक आते-आते यह धर्म सम्पूर्ण विश्व में फैल गया और विश्व का विशालतम धर्म बन गया जिसके अनुयायी किसी भी दूसरे धर्म के अनुयायियों की संख्या की तुलना में सर्वाधिक हैं। सम्प्रदाय और धर्मशास्त्र के मुद्दों पर उठे संघर्षों के कारण ईसाइयत को तीन मुख्य शाखाओं में विभाजित किया गया है। इनके नाम हैं – रोमन कैथोलिक चर्च, पूर्वी ऑर्थोडॉक्स चर्च और प्रोटेस्टैण्ट चर्च। न्यू टेस्टामेण्ट प्रथम ईसाई समुदाय के स्थान के रूप में येरुशलम नगर का उल्लेख करता है। येरुशलम को पीटर, जेम्स और जॉन दि एपॉसल (Apostle) का स्थान माना जाता है जो ईसाइयों के नेता थे। एपॉसल यानी देवदूत के समर्थकों ने येरुशलम छोड़ दिया और जीसस के सन्देश को सम्पूर्ण यूनानी

(Hellenistic) जगत में फैलाया। उन्होंने जीसस का प्रचार इस रूप में किया कि वे इजरायल के ईश्वर हैं जिन्हें मनुष्य-जीवन में रूपान्तरित कर दिया गया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने जीसस को एक मसीहा (त्राणकर्त्ता) के रूप में भी प्रचारित किया। उन्होंने प्रथाओं के यहूदी रूपों को अपनाया; जैसे – मरणोत्तर उपासना, अगरबत्तियों का प्रयोग, वेदी का निर्माण, प्रार्थना के दौरान पवित्र संगीत बजाना, पवित्र पुस्तकें पढ़ना, धार्मिक पंचांग का अनुसरण करना, पादरियों और तपस्वियों का पुरुष होना।

रोमन साम्राज्य के दौरान; मूर्तिपूजक लोगों के कारण प्रारम्भ में ईसाइयों को प्रताड़ित किया गया। मूर्तिपूजक लोगों का मानना था कि उनके दुर्भाग्य के लिए ईसाई लोग ही जिम्मेदार हैं और ईसाइयों के कार्यों से उनके ईश्वर का अपमान हुआ है। इसीलिए मूर्तिपूजक लोगों ने सम्राट के अधिकारियों पर ईसाइयों के विरुद्ध कार्रवाई करने दबाव डाला। हालाँकि प्रथम शताब्दी के अन्त तक आते-आते ईसाइयत को मूर्तिपूजक लोगों पर विजय प्राप्त हुई तथा एक भद्र धर्म के रूप में इसे पहचान और स्वीकार्यता मिली। चर्च के नेताओं के प्रयासों के कारण ईसाइयत ने यहूदी धर्म को पीछे छोड़ दिया। इन नेताओं ने अधिक आकर्षक सिद्धान्तों का निर्माण करने के साथ-साथ मानव-जीवन की आवश्यकताओं की बहुत व्यवस्थित तरीके से व्याख्या की। एपॉसल्स यानी देवदूतों के काल के उपरान्त, ईसाइयों के नेता के रूप में एपॉसलों (Apostles) का स्थान बिशपों ने ले लिया। यह स्थिति कांस्टैण्टाइन के काल तक जारी रही जिसने ईसाइयत को विधिक दर्जा प्रदान किया और जिसे प्रथम ईसाई सम्राट होने का श्रेय प्राप्त है। लेकिन यह थियोडोसियस प्रथम ही था जिसने ईसाइयत (क्रिश्चियनिटी) को एक राज्य-धर्म घोषित किया और तभी से क्रिश्चियनिटी शब्द प्रचलन में आया। जब ईसाइयत ने विधिक प्रस्थिति हासिल कर ली तो चर्च ने प्रशासकों के रूप में प्रान्तों का अधिग्रहण कर लिया और उन्हें धर्मप्रदेशों (Dioceses) का नाम दिया। रोम के बिशप का स्थान सबसे ऊपर हो गया और उन्होंने पोप की उपाधि ग्रहण की। कुछ दुनियावी परिषदें बनायी गयीं जो ईसाई धर्म (क्रिस्टोलोजी) से जुड़े सभी विवादों के लिए उत्तरदायी थीं। ये परिषदें एरियसवाद (Arianism) की निन्दा किया करती थीं जबकि अन्य नेस्टोरियसवाद (Nestorianism) की आलोचना किया करती थीं। इन परिषदों ने कुँवारी मेरी को ईश्वर की माँ (Theotokos) घोषित किया। जबकि चाल्सडन की परिषद ने यह सुझाव दिया कि ईसा के पास दोनों के गुण थे – मनुष्य के भी और ईश्वर के भी। यह भी इंगित किया गया है कि प्रारम्भिक ईसाइयों ने हिब्रू बाइबिल को महत्व प्रदान किया था और इसका उपयोग वे अपने धार्मिक ग्रन्थ के रूप में किया करते थे। प्रारम्भिक ईसाइयों ने ढेर सारे धार्मिक साहित्य के रूप में अपना योगदान दिया; जैसे दृ ईसामसीह की धार्मिक शिक्षाओं पर केन्द्रित न्यू टेस्टामेण्ट का धार्मिक सिद्धान्त, एक्ट्स, एपॉसल लोगों के पत्र और इलहाम या दैवी प्रेरणा (Revelation)। मूसा के नियमों (मोज़ैक लॉ) को आज भी नैतिक उल्लेखों के रूप में माना जाता है जो दस आज्ञाओं (Commandment) पर, महान आज्ञा पर और स्वर्णिम नियम (Golden Rule) पर केन्द्रित है। प्रारम्भ में, ईसाइयों ने कुछ विश्वास और प्रथाएँ स्थापित कीं जिनकी बाद में आलोचना की गयी और उन्हें धर्मविरुद्ध घोषित किया गया। बपतिस्मा यानी ईसाई-दीक्षा (Baptism) की प्रथा इसका एक उदाहरण थी जिसका पालन कुछ यहूदी और जीसस के शिष्य किया करते थे। इस प्रथा में व्यक्ति के मस्तक पर या तो पानी के छींटे डाले जाते थे या फिर व्यक्ति को जल में कुछ देर के लिए डुबा दिया जाता था। यह शुद्धीकरण प्रक्रिया का एक प्रतीक था और इस प्रक्रिया के बाद वह शुद्धीकृत व्यक्ति चर्च में प्रवेश पाने के लिए अधिकृत हो जाता था। इस समारोह को नामकरण-संस्कार भी कहा जाता था और इसे छोटे बच्चों पर भी निष्पादित किया जाता था।

ईसाइयत में उत्पीड़न : उत्पीड़न का तात्पर्य मृत्यु है। रोमन साम्राज्य के काल में यह उत्पीड़न बहुत वृहद पैमाने पर घटित हुआ। सम्राट नीरो ने रोम की विशाल आग के लिए ईसाइयों को जिम्मेदार ठहराया और उसके शासनकाल में सेण्ट पीटर और सेण्ट पॉल जैसे विख्यात लोग शहीद हो गए। कुछ न्यू टेस्टामेण्ट में यह उल्लेख है कि लगभग 250 वर्षों तक ईसाइयों को उत्पीड़न झेलना पड़ा क्योंकि वे रोमन सम्राट की सर्वोच्चता को ईश्वर की तरह मानने से इनकार करते थे। अनेकानेक बाधाओं के बावजूद भूमध्यसागर क्षेत्र के चारों ओर ईसाइयत का फलना-फूलना जारी रहा और इसका परिणाम यह हुआ कि चौथी शताब्दी ईस्वी तक आते-आते ईसाइयत रोमन साम्राज्य का प्रमुख धर्म बन गया।

चर्च : देवदूत-सम्बन्धी युग के उपरान्त नगरीय ईसाई आबादी में से बिशप उभरे और अपने श्रेणीतन्त्र या पदसोपान को उन्होंने एपिसकोपोइ (Episkopoi) अथवा अधिदर्शकों (Overseers), प्रेसबाइतेरोइ (Presbyteroi) अथवा बुजुर्गों (Elders) तथा डायकोनोइ (Diakonoi) अथवा मन्त्रालयी सेवकों के रूप में निर्दिष्ट किया। यह श्रेणीतन्त्र प्रत्येक जगह के लिए एक जैसा नहीं था क्योंकि समय और इलाकों के आधार पर यह परिवर्तित होता रहता था। न्यू टेस्टामेण्ट के लेखकों ने भी ओवरसियर और एल्डर जैसे शब्दों का प्रयोग एक-दूसरे के पर्यायवाची के रूप में किया है। डिडेकेइ (Didache), जिसमें बारह देवदूतों की शिक्षाएँ हैं, में अनेक अवसरों पर बिशपों (bishops) और डीकनों (deacons) की नियक्ति का उल्लेख है। स्वयं ईसाई चर्चों के भीतर भी बिशपों और प्रेसबाइटरों (बुजुर्गों) जैसे चर्च-नेताओं की भूमिकाओं और उत्तरदायित्वों को लेकर विवाद उत्पन्न हो जाया करते थे। कैथोलिक और ऑर्थोडॉक्स जैसे चर्चों ने बैप्टिस्ट (ईसाई दीक्षा-गुरुओं) की जगह पादरी (Priest) शब्द का प्रयोग किया है। हालाँकि सामूहिक चर्चों में "पादरी (Priest)" जैसी उपाधि को मान्यता नहीं प्रदान की गयी। इसकी जगह पर उन्होंने प्रेसबाइटर या एल्डर जैसे शब्दों पर अपना ध्यान केन्द्रित किया है। अनेक अवसरों पर ऐसे चर्चों ने अपने संगठन में बिशप की भूमिका को खारिज भी किया। देवदूतों के काल के उपरान्त बिशप लोग देवदूत-सम्बन्धी पिता (Apostolic Fathers) हो गए। ईसाइयत का विकास ज्यों-ज्यों ग्रामीण इलाकों में हुआ, त्यों-त्यों प्रत्येक समुदाय ने प्रेसबाइटरों की नियुक्ति की जिन्हें बाद में पादरी (Priests) कहा गया। डीकनों (deacons) को भी बीमार और गरीब लोगों की देखरेख की कुछ जिम्मेदारियों का कार्यभार सौंपा गया। दूसरी शताब्दी ईस्वी तक देवदूत-सम्बन्धी (Apostolic) उत्तराधिकार के सिद्धान्त स्वीकार कर लिए गए। इस सिद्धान्त के अन्तर्गत एक बिशप को क्रमानुसार पिछले बिशप का आध्यात्मिक उत्तराधिकारी बना दिया जाता था। परिणामस्वरूप रोमन साम्राज्य के अन्तर्गत आने वाले चर्चों के पास सैकड़ों बिशप हो गए जिनका अन्य बिशपों पर क्षेत्राधिकार होता था। येरुशलम प्रथम चर्च का स्थल बना और इसने अपने महत्व को बनाए रखा। नाइसिया (Nicaea) की प्रथम परिषद के दौरान येरुशलम को विशिष्ट सम्मान दिया जाता था किन्तु इसे अपने प्रान्त की राजधानी (मेट्रोपॉलिटन) सम्बन्धी महानगरीय सत्ता प्रदत्त नहीं की गयी। अपनी प्रथम परिषद के केवल पाँच साल बाद ही एक बिजेण्टाइन नगर कांस्टैण्टीनोपल (कुस्तुनतुनिया) अस्तित्व में आया जो प्रारम्भिक ईसाइयत का एक केन्द्र बना क्योंकि यह अनातोलिया के अधिक निकट था।

चर्चों के पिता (फ़ादर) : चर्च के पिता का तात्पर्य ईसाई-धर्म सम्बन्धी (ecclesiastical) लेखकों के एक समूह से है जिनसे सैद्धान्तिक मामलों के सम्बन्ध में प्राधिकारियों द्वारा अपील की गयी थी। चर्च का पिता होने के लिए कुछ पूर्व-शर्तें आवश्यक थीं; जैसे – सिद्धान्त की रूढ़िवादिता (orthodofy), जीवन की पवित्रता और चर्च द्वारा प्राधिकृति आदि। प्रारम्भिक ईसाई लेखन पत्रों के एक समूह के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। ये पत्र देवदूत-सम्बन्धी (Apostolic) पिताओं को समर्पित थे, जिनके नाम बार्नाबास के अपीज़ल (Epistle), हर्मस के शेफ़र्ड, क्लीमेण्ट और डिडेकेइ (Didache) के अपीज़ल्स (Epistles) थे। यह समूह

अपनी सादगी और उत्साह के कारण उल्लेखनीय है तथा इस पर यूनानी दर्शन का कोई प्रभाव नहीं दिखता। एण्टियोक के इग्नाशियस ने बिशपों की सत्ता का समर्थन किया था।

विश्राम का समय (**sabbath**) : विश्राम का समय (sabbath) एक धार्मिक संस्कार है जिसे सप्ताह के किसी भी दिन किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, यहूदी लोग अपना विश्राम का समय शनिवार को मनाते हैं जबकि ईसाई लोग रविवार को विश्राम के समय का दिन मानते हैं। कहा जाता है कि सम्राट कांस्टैण्टाइन के कारण ही इस संस्कार के दिवस को शनिवार से बदलकर रविवार कर दिया गया था किन्तु ऐसा कहना विवादास्पद है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रारम्भिक चर्च विश्राम के समय नामक संस्कार को आवश्यक महत्व नहीं देते थे।

क्रिस्टोलॉजी : अधिकांश ईसाइयों का मानना था कि जीसस एक स्वर्गिक आत्मा थे जिन्होंने एक मनुष्य के रूप में इस पृथ्वी पर ईश्वर के अनोखे दूत के रूप में अवतार लिया था। न्यू टेस्टामेण्ट भी जीसस के दैवीय चरित्र का उल्लेख करता है। हालाँकि इस विषय पर एक विद्वतापूर्ण बहस होती रही है कि क्या जीसस को ईश्वर माना जाना चाहिए। जीसस की मृत्यु के पश्चात, जीसस की परम्परा के ही अगले व्यक्ति पॉल ने जीसस को ईश्वर का पुत्र कहा है जो पुनर्जीवित हो उठे थे और स्वर्ग से लौटकर वापस आ गए थे ताकि इस खत्म हो रहे और क्षीण हो रहे विश्व से अपने विश्वसनीय, मृत और जीवित को बचाया जा सके। संयुक्त सिनॉप्टिक शिक्षाओं, मार्क्स (Marks) की शिक्षाओं और जॉन की शिक्षाओं द्वारा भी इसी प्रकार की अवधारणा का प्रचार-प्रसार किया गया। बुक ऑफ़ रिवीलेशन जीसस को अल्फा और ओमेगा के रूप में चित्रित करती है जिसका अर्थ है प्रथम और अन्तिम। इस प्रकार जीसस ही ब्रह्माण्ड का आदि और अन्त दोनों हैं। ब्रह्माण्ड में व्यवस्था या क्रमबद्धता के सिद्धान्त को निर्दिष्ट करने के लिए यूनानी दर्शन में "लोगो (Logo)" शब्द का प्रयोग किया गया है। लोगो (logo) को खारिज करने वाले लोगों को एलोगी कहा गया और इन्होंने जॉन की शिक्षाओं को भी खारिज कर दिया था। ऐसा प्रतीत होता है कि लोगो को अंगीकार करने वाले लोग इस बात पर सहमत थे कि जीसस एक साधारण मनुष्य की तरह थे तथा वे जोसेफ और मेरी के पुत्र थे और अपने बपतिस्मा, रूप-परिवर्तन और पुनर्जीवन के कारण वे ईश्वर के पुत्र बने।

परलोक-विद्या (**Eschatology**) : धर्मशास्त्रीय अध्ययन की वह शाखा जो मृत्यु, जगत के अन्त, निर्णय, आत्मा और मानवता की अन्तिम नियति जैसी अन्तिम चीजों से सम्बन्धित होती है, उसे परलोक-विद्या कहा जाता है। परलोक-विद्या के सन्दर्भ ओल्ड टेस्टामेण्ट, न्यू टेस्टामेण्ट, मैथ्यू की शिक्षाओं, सामान्य पत्रों (General epistles), पॉल के पत्रों और बुक ऑफ़ रिवीलेशन में देखे जा सकते हैं।

गिरजा-निर्माणशास्त्र (**Ecclesiology**) : पहली और दूसरी शताब्दी ईस्वी में ईसाइयों की जनसंख्या बहुत तीव्र गति से बढ़ी। इस आपवादिक वृद्धि ने ईसाइयों को इसके लिए विवश किया कि वे राजनीतिक और सामाजिक-आर्थिक पर्यावरण के साथ अपने सम्बन्धों के साथ-साथ सामाजिक परिवर्तन के बारे में सोचें। ईसाइयत के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ उनके भौगोलिक विस्तार के साथ-साथ उनका सामाजिक संजाल भी बढ़ा। इसके कारण कुछ नवीन शिक्षाओं के अंगीकरण की नींव भी पड़ी और देवदूत-सम्बन्धी (apostles) मूल शिक्षाएँ पीछे छूट गयीं। देवदूत-सम्बन्धी शिक्षाएँ धर्मविरुद्ध हो गयीं और इसके कारण स्वयं चर्चों के बीच विवाद का मार्ग खुल गया। प्रारम्भिक कैथोलिकवाद ने गिरजा-निर्माणशास्त्र (Ecclesiology) के रूप में अपना विकास किया और यह चर्च की एकता के विरुद्ध खड़ा हो गया। धर्मविरुद्ध शिक्षा के खिलाफ समाधान अधिक कठोर और मानकीकृत था। बिशपों, एल्डरों और डीकनों को समाहित करते हुए त्रिखण्डीय (tri-partite) चर्च नेतृत्व के रूप में

यह अस्तित्व में आया। अंगीकरण हेतु यह सांगठनिक संरचना एक सार्वभौमिक प्रतिरूप (model) बन गयी तथा कैथोलिक, ऑर्थोडॉक्स और एंग्लिकन जैसे चर्चों ने इस प्रतिमान (पैटर्न) का अनुसरण किया। न्यू टेस्टामेण्ट बिशपों का उल्लेख तो करता है लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि क्या यह धर्मप्रदेशों और बिशपतन्त्र (monepiscopacy) का समर्थन करता है या नहीं। वास्तव में, रोम में अनेक बिशपों का अस्तित्व यह सिद्ध करता है कि इग्नाशियस के समय में बिशपतन्त्र का व्यवहार किया जाता था जो उसकी त्रिखण्डीय संरचना को अन्य चर्चों के सम्बन्ध में प्रभावित करता था।

धार्मिक लेखन : आदिम ईसाइयों ने अनेक धर्मग्रन्थों के रूप में अपना योगदान दिया; जैसे– न्यू टेस्टामेण्ट के धार्मिक सिद्धान्त, जिसने अपने भीतर धार्मिक नियमों सम्बन्धी शिक्षाओं को समाविष्ट कर रखा है, एक्ट्स, देवदूत-सम्बन्धी पत्र और रेवीलेशन (Revelation)। दूसरी शताब्दी ईस्वी के मध्य तक यहूदी और ईसाइयत - दोनों - में धार्मिक साहित्य के लेखन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। न्यू टेस्टामेण्ट के धार्मिक सिद्धान्त का अस्तित्व यह सिद्ध करता है कि परम्पराएँ और विश्वास केवल ओल्ड टेस्टामेण्ट पर ही आधारित नहीं थे। पैगम्बरों को समर्पित कुछ धार्मिक साहित्य, जैसे टोरा भी लिखा गया। धार्मिक सिद्धान्त (केनन) धार्मिक प्रथाओं और विश्वासों के स्रोत भी बने; उदाहरण के लिए, प्रारम्भिक ईसाइयत और यहूदीवाद के विभाजन ने यहूदी धार्मिक सिद्धान्त को जन्म दिया। ईसाइयों द्वारा सेप्टुआजिंट (Septuagint) के सिवाय अपने स्वयं के धर्मग्रन्थों को अपनाने के सम्बन्ध में कोई स्पष्ट सूचना उपलब्ध नहीं है। किन्तु पापियस (Papias) ने यह उल्लेख किया है कि दूसरी शताब्दी ईस्वी तक ईसाई लोगों ने धर्मग्रन्थों की मौखिक परम्परा का पक्ष लेना प्रारम्भ कर दिया था। रोम पर जब यूनानी लोगों का कब्जा हो गया तो हिब्रू धर्मग्रन्थों का यूनानी भाषा में अनुवाद किया गया। ये बहुत प्रभावशाली अनुवाद थे। प्रोटेस्टैण्ट धर्मसुधार के दौरान अधिकांश ईसाइयों ने सेप्टुआजिंट की उन पुस्तकों को खारिज करना शुरू कर दिया जिनका उल्लेख यहूदी पाठ में नहीं था। इन पुस्तकों को बाइबिल सम्बन्धी धार्मिक सिद्धान्तों का अंग नहीं माना गया। दूसरे शब्दों में इन्हें बिबलिकल एपोक्रिफा घोषित कर दिया गया। न्यू टेस्टामेण्ट की कुछ पुस्तकें भी इसी तरह विवादास्पद रहीं; जैसे – एण्टाइलगोमेना।

9.4 ईसाइयत का प्रसार

प्रारम्भिक ईसाइयत की जड़ें उस यूनानीकृत (Hellenized) रोमन साम्राज्य में मौजूद हैं जिसने धीरे-धीरे सम्पूर्ण पूर्वी अफ्रीका और दक्षिण एशिया को आच्छादित कर लिया था। ईसाई देवदूतों (Apostles) ने येरुशलम को छोड़ दिया और व्यापक यात्राएँ कीं तथा साम्राज्य के आर-पार जाने वाले मार्गों पर स्थित नगरों और क्षेत्रों में नृजातीय समुदायों का गठन किया। देवदूतों (Apostles), व्यापारियों, धर्मोपदेशकों और सैनिकों ने ही ईसाइयत का प्रचार-प्रसार उत्तरी अफ्रीका, एशिया, आर्मेनिया, अल्बानिया, अरब, ग्रीस और अन्य संलग्न भौगोलिक क्षेत्रों में किया था। प्रथम शताब्दी के अन्त तक ईसाइयत का प्रसार ग्रीस और इटली तक हो चुका था। 201 ई. में ओसरोएन (Osroene) को प्रथम ईसाई राज्य घोषित किया गया जबकि आर्मिनिया का राज्य दूसरा ऐसा राज्य बना जिसने 301 ई. में ईसाइयत को अपना आधिकारिक धर्म घोषित किया। आर्मेनियाई एपॉसलिक (Apostolic) चर्च आज भी संसार का सबसे पुराना राष्ट्रीय चर्च है।

इस सम्बन्ध में अनुसन्धानकर्ताओं के मस्तिष्क में अनेक प्रश्न उपजे कि ऐसी कौन-सी चीज थी जिसने ईसाइयत को अन्य धर्मों की तुलना में इतना अधिक सफल और लोकप्रिय बना दिया। कुछ ईसाइयों का मत है कि इसके लिए जिम्मेदार कारक थे : धर्म की सत्यता और

ईश्वर का हस्तक्षेप। कुछ विद्वानों की राय है कि मूर्तिपूजकों पर ईसाइयत इसलिए भारी पड़ी क्योंकि इसने अपने अनुयायियों के जीवन को अनेक दृष्टियों से समुन्नत किया। ईसाइयत ने मृत्यु के बाद पुनर्जीवित होने के सिद्धान्त पर बल दिया, जो यूनानी विश्वास की पारम्परिक प्रणाली से मेल खाता था। इसके अतिरिक्त, ईसाइयत इस प्रक्रिया की व्याख्या करती है कि जब संसार समाप्त होने जा रहा है, तब पुनर्जीवन का यह सिद्धान्त वास्तव में किस प्रकार घटित होगा। अनुसन्धानकर्ताओं का एक वर्ग और भी है जो यह मानता है कि ईसाइयत के प्रसार के दो सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण क्षमा (apologies) और न्यू टेस्टामेण्ट के अनुवाद थे।

बोध प्रश्न 2

1) ईसाइयत क्या है?

....

....

....

....

....

2) "विश्राम के समय (Sabbath)" और "क्रिस्टोलोजी" से आप क्या समझते हैं?

....

....

....

....

....

3) ईसाइयत के प्रसार पर एक टिप्पणी लिखिए।

....

....

....

....

....

9.5 इस्लामी सभ्यता

छठवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध अरब में राजनीतिक अशान्ति का साक्षी बना। इस उथल-पुथल में धार्मिक विखण्डन की प्रमुख भूमिका रही; उदाहरण के लिए, यमन में यहूदीवाद प्रमुख धर्म के रूप में फल-फूल रहा था; फारस में ईसाइयत का उभार हुआ और इससे अरब बहुदेववाद का अनुसरण करने की दुविधा में पड़ गया लेकिन भविष्य में प्रस्तुत किए जाने वाले एक नवीन धर्म के अन्य रूप की सम्भावनाएँ अभी भी विद्यमान थीं। इन धर्मों ने समाज को बौद्धिकता और आध्यात्मिकता उपलब्ध करायी थी। इसके अतिरिक्त, कुछ अन्य लोग ऐसे भी थे जो किसी विदेशी विश्वास को अंगीकार करने के लिए अनिच्छुक थे। सम्पूर्ण प्रायद्वीप के आर-पार अरबी भाषा के पुराने मूर्तिपूजा-सम्बन्धी शब्दों को हटाने के लिए यहूदी और

ईसाइयत वहाँ मौजूद थी। कुरैश मक्का का प्रमुख धार्मिक सम्प्रदाय था और उसने पवित्र माह मनाने की प्रथा शुरू की जिसका परिणाम यह हुआ कि सारी हिंसा पर विराम लग गया तथा लोग मक्का में स्थित बहुदेववादी तीर्थस्थल काबा की यात्रा शान्तिपूर्वक करने लगे। काबा एक प्रसिद्ध तीर्थस्थल है जहाँ से नगर के लिए ढेर सारा राजस्व उत्पन्न होता है। परम्परा के अनुसार, यह आकलित किया गया है कि पैगम्बर मुहम्मद का जन्म मक्का में एक कुरैश परिवार में सन् 570 ई. में हुआ था। चालीस वर्ष की अवस्था में उन्हें ईश्वर के शब्द देवदूत गैब्रिएल द्वारा प्राप्त हुए। कुरान में ये शब्द संकलित हैं। उनके सन्देश ने जनता को आकृष्ट किया लेकिन उन्हें मक्का में विरोधी भी मिले। मक्का के उल्लेखनीय लोगों के बढ़ते दबाव के कारण उन्होंने मक्का छोड़ दिया और मदीना (Yathrib) चले गए जहाँ उनके अनुयायियों ने उनका हार्दिक स्वागत किया। यह इस्लामी दौर का प्रारम्भिक काल था जिसे हिजरा कहा जाता है। मदीना (याथ्रिब) में मुहम्मद ने नवीन कुरान के आधार पर एक नए इस्लामी समुदाय की स्थापना की। कानून और धार्मिक प्रथाओं के निर्माण में कुरान ने दिशा और मार्गदर्शन उपलब्ध कराया। धीरे-धीरे मुहम्मद ने मक्का पर नियन्त्रण स्थापित कर लिया और कुरैश की निष्ठा को सिद्ध कर दिया। उन्होंने उस समय विद्यमान कबीलाई प्रमुखों को विभिन्न समझौतों के लिए बाध्य किया; जैसे – गुटों (एलायंस) का सृजन करना, इस्लामी प्रथाओं का पालन करना तथा सरकार को दान देना। सरकार में इस्लामी सेना, प्रतिनिधि और राजकोष सम्मिलित थे। उनका धर्मोपदेश समाप्त होने के बाद ही कुरान की अन्तिम आयत लिखी गयी। अपने आखिरी उपदेश में उन्होंने मुस्लिमों को आदेश दिया कि वे अली के प्रति अपनी वफादारी दर्शाएँ। उनकी मृत्यु के पश्चात इस्लामी राज्य पर चार खलीफाओं की एक श्रृंखला ने शासन किया जिनके नाम अबू बकर, उमर इब्न अल खत्तब, उसमान इब्न अफ्फान और अली इब्न अबी तालिब हैं। इन नेताओं को "राशिद-उम" नाम से जाना जाता था। इस्लामी सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार फारस, सीरिया, लेवंत, मिस्र और उत्तरी अफ्रीका जैसे देशों तक करने में वे सफल रहे।

649 ई. में मुआविया प्रथम, जिसे सीरिया का शासक (गवर्नर) नियुक्त किया गया था, ने नौसेना की अपनी एक टुकड़ी बनायी जिसमें ईसाई, कॉप्ट्स (मिस्र के देशज लोग), सीरियाई ईसाई, नाविक और मुसलमान लोग शामिल थे। इस नौसैनिक टुकड़ी ने सन् 655 ई. में हुई मास्ट की लड़ाई में बिजेण्टाइन लोगों को पराजित किया और इस प्रकार मुसलमानों के लिए भूमध्यसागर का द्वार खोल दिया। युद्धों के दौरान मुस्लिम सेनाएँ मुख्य कस्बे से दूर सैनिक कैम्प में निवास किया करती थीं। परवर्ती काल में ये कैम्प शहरों के रूप में विकसित हो गए। ऐसे शहरों के उदाहरण के रूप में यहाँ इराक के बसरा और कुफा तथा मिस्र के फुस्टैट जैसे कुछ शहरों का नाम लिया जा सकता है। उमर के बाद आने वाले खलीफा उसमान इब्न अफ्फान ने 650 ई. से 656 ई. के बीच कुरान की मानक प्रति लिखे जाने का आदेश दिया और परिणामस्वरूप 650 ई. से 656 ई. के बीच इसे तैयार कर लिया गया ताकि इस्लामी साम्राज्य के विस्तार के लिए विभिन्न केन्द्रों पर इसे भेजा जा सके। 656 ई. में उसमान की हत्या के बाद अली इब्न अबी तालिब अगले खलीफा हुए और अपनी राजधानी को स्थानान्तरित करके वे उसे कुफा (इराक) ले गए। मारवान प्रथम द्वारा उत्पन्न किए गए संघर्ष के कारण पहला गृह युद्ध हुआ जिसे पहला फितना कहा जाता है। सन् 661 ई. में ख्वारिजियों द्वारा अली की हत्या कर दी गयी जबकि मुआविया ने उमय्यद नामक एक राजवंश की स्थापना की और दमिश्क को अपनी राजधानी बनाया। मुहम्मद के एकमात्र जीवित बचे पौत्र हुसैन अली को करबला की लड़ाई में मार डाला गया और इससे दूसरे फितना का दौर शुरू हुआ। हालाँकि मुआविया के अधीन मुस्लिम साम्राज्य का उत्थान जारी रहा और उन्होंने रोड्स, क्रीट, काबुल, बुखारा और समरकन्द तक अपना विस्तार किया। 664 ई. तक अरब सेनाओं ने काबुल को जीत लिया और 665 ई. तक मगरिब (Maghreb) पर विजय हासिल कर ली।

महत्वपूर्ण खलीफा

उमय्यद खलीफा : उमय्यद राजवंश का नाम उमय्या इब्न अब्द शम्स के नाम से लिया गया है जो उमय्यद खलीफा के परदादा थे। उमय्यद खलीफा ने 661 से 750 ई. तक शासन किया था। यह राजवंश मक्का से प्रव्रजन कर गया था और दमिश्क नगर को इसने अपनी राजधानी बनाया। 666 ई. में अब्दुल रहमान की मृत्यु के पश्चात मुआविया प्रथम गद्दी पर बैठा और साम्राज्य में बहुत सारे परिवर्तन किए। यह एक नए परिवार के सत्ता में आने और उसके प्रादुर्भाव का चिन्ह था। उमय्यद के शासन के कारण स्थानीय आबादी, खासतौर पर नए धर्मान्तरित मवाली लोगों में असन्तोष पनपा। इसी बीच अब्बास इब्न अब्द अल मुत्तालिब ने विश्वास हासिल किया और उमय्यद वंश के शासन को समाप्त करके सन् 750 में एक नवीन राजवंश "अब्बासी" की स्थापना की तथा बगदाद को इस नवीन राजवंश की राजधानी बनाया। यह तथ्य है कि उमय्यद राजवंश ने पचास लाख वर्ग मील से भी अधिक भौगोलिक क्षेत्र पर अपना शासन चलाया था। मुआविया द्वित्तीय का शासनकाल दूसरे फितना (गृह युद्ध) का साक्षी बना। बहुत सारी बाधाओं के बावजूद, अपने सारे महत्वपूर्ण दस्तावेजों का अरबी में अनुवाद कराने में वह सफल रहा। मुस्लिम जगत में सबसे पहले उसी ने करेंसी नोट चलाए। अपने शासनकाल में उसने कृषि और वाणिज्य सम्बन्धी गतिविधियों को उन्नत बनाया। मुस्लिम शासन के विस्तार की परम्परा को अब्द-अल-मलिक ने जारी रखा। अरबी को राजभाषा का दर्जा दिया गया और डाक सेवाएँ शुरू की गयीं। अल-वालिद के अधीन इस्लामी जगत का विस्तार मिस्र और कार्थेज तक हुआ तथा यह उत्तरी अफ्रीका के पश्चिमी हिस्से तक पहुँच गया। जबकि तारिक इब्न जियाद ने जिब्राल्टर की जलसन्धि को पार किया और आइबेरियाई प्रायद्वीप को पराजित किया। इस्लामी भूभाग पूर्व दिशा में सिन्धु घाटी तक विस्तृत था। अल वालिब का शासनकाल इसलिए उल्लेखनीय रहा क्योंकि उसी के शासन के दौरान इस्लामी शक्ति अपने चरम पर थी। अल वालिब की मृत्यु के बाद सुलेमान इब्न अब्द अल मलिक खलीफा बना और वह रामल्ला में ही बना रहा। उसने कांस्टैण्टीनोपल (कुस्तुनतुनिया) पर आक्रमण करने के लिए सेनाएँ भेजीं किन्तु इन सेनाओं को भारी नुकसान उठाना पड़ा। 717 ई. में वह मर गया। उमर द्वितीय की मृत्यु के बाद याजिद द्वितीय शासक बना। वह ख्वारिजियों के विरुद्ध लड़ा और उसने ख्वारिजियों के नेता शादाब को मार डाला तथा खिलाफत के भूभाग का विस्तार काकेशस तक किया। याजिद की मृत्यु के बाद हिशम इब्न अब्द अल मलिक सत्ता में आया। उसके शासन को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इन चुनौतियों में, उदाहरण के लिए, बर्बर (Berber) का विद्रोह और जायद इब्न अली का विद्रोह यहाँ उल्लेखनीय हैं। मारवान द्वित्तीय अन्तिम उमय्यद शासक था जिसने अपना शासन दमिश्क से संचालित किया था। उसकी मृत्यु के साथ ही पूर्व दिशा में उमय्यद शासन का अन्त हो गया। अब्बासियों, जिन्होंने क्षेत्र में धीरे-धीरे लोकप्रियता हासिल की थी, ने उमय्यदों का संहार करना शुरू किया। इसका परिणाम यह हुआ कि अब्द अल रहमान के सिवाय सारे उमय्यदों को मार डाला गया। अब्द अल रहमान भागकर आइबेरियाई प्रायद्वीप चला गया और उसने वहाँ पर एक राजवंश की स्थापना की।

अब्बासी खलीफा : अब्बासी राजवंश 750 ई. में अस्तित्व में आया। उन्होंने भूमध्यसागरीय क्षेत्र को हराया और सिसिली तक विस्तार किया। उमय्यदों के विरुद्ध जो आक्रोश और असन्तोष व्याप्त था, उसी के कारण अब्बासी अस्तित्व में आए। अब्बासियों के अधीन इस्लामी सभ्यता का स्वर्णिम दौर शुरू होता है। इस दौर में केवल अरबी भाषा के गद्य और कविताओं का विकास हुआ। अल मंसूर, हारुन अल रशीद और अल मामून के शासनकाल के दौरान अब्बासी कला, विज्ञान, वाणिज्य और उद्योग खूब फले-फूले तथा फारस और ट्रांस-ऑक्सियाना की रणनीतिक अवस्थिति को समझते हुए राजधानी को दमिश्क से बगदाद

स्थानान्तरित कर दिया गया। इस समय खिलाफत बिखरी हुई थी और उन्होंने क्षेत्रीय राजवंश स्थापित किए। अगलाबिदों (Aghlabids) को हारुन अल रशीद ने स्वतन्त्र शासकों के रूप में नियुक्त किया था किन्तु उन्होंने बहुत कम समय के लिए ही शासन किया और 909 ई. में शिया फातिमिद राजवंश द्वारा उन्हें हटा दिया गया। फातिमिदों ने अब्बासी मिस्र को परास्त कर दिया और सन् 973 ई. में अल-काहिरा को अपनी राजधानी घोषित कर दिया। फारस में तुर्क गजनवियों ने अब्बासियों से गद्दी छीन ली। चाहे बलपूर्वक या फिर धर्मान्तरण के माध्यम से इस्लाम धर्म का विस्तार जारी रहा। भारत में 1193-1209 ई. तक गंगा नदी तक का क्षेत्र इस्लाम धर्म के भूभाग के अन्तर्गत आ गया था। पश्चिमी अफ्रीका में मुस्लिमों का प्रादुर्भाव सन् 1000 ई. के तुरन्त बाद देखा गया। 1081 से 1097 ई. के बीच मुसलमान शासकों ने कानेम में शासन किया, गाओ में मुसलमान लोग 1007 ई. तक पहुँचे, जबकि माली में तेरहवीं शताब्दी में इस्लामी राज्य की स्थापना की गयी। अब्बासियों ने प्राथमिक रूप से इस्लामी एकता पर बल दिया। मुस्लिम समुदायों के विभिन्न सम्प्रदायों को एक मंच पर लाया गया। अब्बासियों ने उमय्यदों के सामाजिक और नैतिक चरित्र पर प्रहार करना जारी रखा। चार मजहबों (Madhabs) की स्थापना के साथ-साथ शरिया को संहिताबद्ध किया गया। इस काल के दौरान सूफीवाद का उत्थान हुआ और शाही बुखारी के धार्मिक सिद्धान्तों का संग्रह पूर्ण किया गया। इस्लाम में शिया और सुन्नी दो मजहब उभरे, जिन्होंने धर्मशास्त्रीय आधार पर इस्लाम के अनुयायियों को विभाजित कर दिया। यहाँ तक कि फातिमिद (Fatimid) और अयूबिद (Ayyubid) के कालों में भी विभाजन का यह क्रम जारी रहा।

फातिमिद खलीफा : इनका उद्‌भव इफ्रीकिया में हुआ। इफ्रीकिया में आधुनिक ट्यूनीशिया और पूर्वी अल्जीरिया के क्षेत्र सम्मिलित हैं। इस राजवंश की स्थापना मुहम्मद की पुत्री फातिमा अस-जाहरा के नाम पर अब्दुल्ला अल महदी द्वारा सन् 909 ई. में की गयी थी। जैसाकि अधिकांश सुन्नी करते थे, उसी तरह फरामिदों (Faramids) और जायदियों (Zaydis) ने भी हनफी न्यायशास्त्र का ही उपयोग किया। शीघ्र ही, फातिमिद खिलाफत का क्षेत्र केन्द्रीय मगरिब (मोरक्को, अल्जीरिया, ट्यूनीशिया और लीबिया) तक विस्तृत हो गया और ट्यूनीशिया इसकी राजधानी बनी। इख्शिदीद (Ikhshidid) राजवंश को पराजित करते हुए वे मिस्र में प्रविष्ट हुए और सन् 969 ई. में उन्होंने अल-काहिरा (कैरो) में अपनी राजधानी स्थापित की। मिस्र के बाद फातिमिद लोग सीरिया, सिसिली और दक्षिणी इटली में प्रविष्ट हुए। मिस्र इस राजवंश का केन्द्र बना। मिस्र से ही उत्तरी अफ्रीका, सिसिली, फिलिस्तीन, लेबनान, सीरिया, लाल सागर के तटीय क्षेत्रों, यमन और हेजाज़ के भूभागों पर नियन्त्रण किया जाता था। फातिमिद लोगों ने भूमध्यसागर और हिन्द महासागर में व्यापारिक और वाणिज्यिक गतिविधियों की शुरुआत भी की और बाद में इनका विस्तार चीन तक कर दिया गया।

9.6 प्रमुख साम्राज्य और इस्लामी आन्दोलन

अयूबी (Ayyubid) साम्राज्य : मिस्र में केन्द्रित इस साम्राज्य की स्थापना 1174 ई. में सलादीन ने की थी। अयूबियों ने बारहवीं और तेरहवीं शताब्दियों के दौरान शासन किया था तथा मिस्र, सीरिया, मेसोपोटामिया, हेजाज़, यमन और आधुनिक ट्यूनीशिया तक का भूक्षेत्र इनके अधीन था। 1230 ई. तक सीरिया के अयूबी शासकों ने मिस्र से स्वतन्त्र होने का प्रयास किया, लेकिन असफल रहे। 1250 ई. तक दास रेजीमेण्ट ने मिस्री राजवंश को उखाड़ फेंका। 1260 ई. तक मंगोलों ने अयूबी भूभागों पर नियन्त्रण स्थापित कर लिया।

मंगोल आक्रमण : तेरहवीं शताब्दी में मंगोलों ने आक्रमण किया और इस्लाम के स्वर्णिम युग का अन्त कर दिया। चंगेज खान के नेतृत्व में अब्बासियों के दौर को समाप्त कर दिया गया। मंगोलों के आक्रमण के कारण मध्य एशिया का सामाजिक और आर्थिक जीवन दयनीय हो गया। अपने राजवंश का विस्तार उन्होंने मध्य एशिया और फारस तक किया। मंगोलों ने बगदाद को अपना निशाना बनाया जो अब्बासियों की राजधानी थी। सन् 1251 ई. में बगदाद का पतन हो गया और बगदाद के अन्तिम खलीफा को मार डाला गया। अत्याचारियों ने बगदाद नगर को लूटा और नष्ट कर दिया। हालाँकि मिस्री माम्लूक लोगों ने ऐन जलूत (Ain Jalut) की लड़ाई में सन् 1260 ई. तक मंगोल सेना को वापस जाने के लिए विवश कर दिया।

माम्लूक साम्राज्य : 1250 ई. तक दास रेजीमेण्टों ने अयूबी मिस्रियों से गद्दी हासिल कर ली और इस प्रकार माम्लूक साम्राज्य अस्तित्व में आया। सैन्य अभ्यास उनकी मुख्य उपलब्धि थी और इन्हीं सैन्य अभ्यासों के कारण ही उन्होंने मंगोलों को उत्तर-पूर्व के भूभाग छोड़ने के लिए बाध्य कर दिया। हिम्स की लड़ाई में मंगोल दुबारा पराजित हुए और इस प्रकार माम्लूक सीरिया तक चले गए। सीरिया और मिस्र को एकताबद्ध करने में वे सफल रहे। माम्लूकों को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा; जैसे – राजनीतिक अस्थायित्व, सैन्य आक्रमण, आर्थिक दरिद्रता तथा मुस्लिम भूभाग और गैर-मुस्लिम भूभाग के मध्य होने वाले छद्म युद्ध। रूढ़िवादी माम्लूकों ने अनेक धार्मिक इमारतें बनवायीं, विशेषकर मिस्र में मस्जिदें, मदरसे, खानकाहें। इनके प्रमाण प्राचीन काहिरा में आज भी देखे जा सकते हैं।

इस्लामी मंगोल साम्राज्य : उपलब्ध ऐतिहासिक प्रमाणों के अनुसार, इल्खानेट (Ilkhanate), गोल्डेन हॉर्डे (Golden Horde) और चगताई खानेट (Khanate) ने इस्लाम स्वीकार किया था। इन सबने इल्खानेट शासकों को हटा दिया और तैमूर के नाम से एक नवीन मंगोल शक्ति उभरी। तैमूर ने सन् 1360 ई. में फारस पर आक्रमण किया था। वे दिल्ली सल्तनत के विरुद्ध भारत तक आ गए और अन्ततः अनातोलिया में ऑटोमन तुर्कों को परास्त कर दिया। समरकन्द नगर में उन्होंने अपनी राजधानी बनायी। चीन में जो प्लेग शुरू हुआ था वह सन् 1347 ई. में सिकन्दरिया (मिस्र) तक पहुँच गया और इसके कारण सम्पूर्ण आबादी के एक-तिहाई हिस्से की मृत्यु हो गयी। युद्ध और प्लेग का दुखद संयोग मध्य-पूर्व के इस्लामी क्षेत्रों के लिए घातक सिद्ध हुआ। अन्ततः तैमूर राजवंश इस्लाम की अनेक शाखाओं में विभाजित हो गया। उदाहरणार्थ, भारत के मुगल उन्हीं में से एक थे।

9.7 इस्लाम का विस्तार

अफ्रीका में इस्लाम : 632 ई. में पैगम्बर मुहम्मद की मृत्यु के बाद उमैय्यदों ने उत्तरी अफ्रीका को पराजित कर दिया। 640 ई. तक अरब लोग मेसोपोटामिया तक फैल चुके थे तथा आर्मेनिया और बिजेण्टाइन सीरिया उनके भूभाग के अन्तर्गत आ चुके थे। दमिश्क उमैय्यद खिलाफत का केन्द्रीय स्थल बना जबकि 641 ई. तक सम्पूर्ण मिस्र अरबों के अधीन आ चुका था।

मगरिब (Maghreb) : मुसलमानों द्वारा स्थापित सबसे पहला नगर कैरोअन (Kairouan) था, जो ट्यूनीशिया में अवस्थित था। अरब सेनापति उक्बा इब्न नफी ने इस नगर की स्थापना की थी और कैरोअन की महान मस्जिद का निर्माण करवाया था। इस्लामी इतिहास के दौरान यह क्षेत्र बहुत स्वतन्त्र था। इदरीस राजवंश, जिसका नाम इसके प्रथम सुल्तान इदरीस प्रथम के नाम पर पड़ा था, ने पश्चिमी मगरिब यानी मोरक्को पर 788 से 985 ई. तक शासन किया। ग्यारहवीं शताब्दी तक, सहारा के अल्मोरावी (Almoravid) राजवंश का

उभार अफ्रीका के उत्तरी-पश्चिमी हिस्से से हो चुका था। मूरी (Moorish) साम्राज्य ने विशाल भूक्षेत्र पर शासन किया जिसमें शामिल थे : दक्षिण में आधुनिक मोरक्को, पश्चिमी सहारा, मॉरितानिया, जिब्राल्टर, अल्जीरिया, आधुनिक सेनेगल और माली; उत्तर में स्पेन और पुर्तगाल। एक अन्य राजवंश, जो अल्मोहाद (Almohad) राजवंश या एकतावादियों (Unitarians) के नाम से जाना जाता था, ने बारहवीं शताब्दी में पाँचवें मूरा (Moorish) राजवंश की स्थापना की तथा अल-अंदालुस के साथ-साथ मिस्र को शामिल करते हुए सम्पूर्ण उत्तरी अफ्रीका पर अधिकार कर लिया।

हॉर्न ऑफ़ अफ्रीका : हॉर्न ऑफ़ अफ्रीका में इस्लाम का उभार उतना ही प्राचीन है जितना प्राचीन इस धर्म का इतिहास। लाल सागर और अरब प्रायद्वीप के आसपास रहने वाले व्यापारियों और नाविकों का नए धर्मान्तरित व्यापारी साझेदार मुसलमानों के साथ गहन सम्पर्क स्थापित था। इसी सम्पर्क के कारण वे प्रेरित हुए और इस प्रकार हॉर्न क्षेत्र ने एक नए धर्म का उभार देखा। यह भी महत्वपूर्ण है कि कुरैश से स्वयं को बचाने के लिए इस्लामी शिष्यगण ज़ीला (उत्तरी सोमालिया) चले गए। उन शिष्यों को हॉर्न क्षेत्र के विभिन्न इलाकों में सुरक्षित स्थान उपलब्ध कराए गए ताकि उनके धर्म को प्रोत्साहन मिल सके। सातवीं शताब्दी में कुरैश लोगों पर मुसलमानों की विजय के कारण स्थानीय व्यापारियों और नाविकों पर अपने अस्तित्व को बचाए रखने का दबाव पड़ा। इसका परिणाम यह हुआ कि इन सबने इस्लाम स्वीकार कर लिया तथा भूमध्यसागर और लाल सागर के व्यापारिक मार्ग मुस्लिम खलीफाओं के नियन्त्रण में आ गए। अरब प्रायद्वीप में उथल-पुथल के कारण विशाल पैमाने पर प्रव्रजन हुआ और लोग सोमाली के समुद्र तट पर आ बसे। हॉर्न क्षेत्र में इस्लाम के प्रोत्साहन के लिए इन प्रव्रजनों ने उत्प्रेरक की तरह कार्य किया।

ग्रेट लेक्स : ग्रेट लेक्स क्षेत्र में व्यापारिक अभ्यास के प्रचलन के कारण यह क्षेत्र इस्लाम के आगमन का साक्षी बना। ग्रेट लेक्स के निवासियों ने मुसलमानों के बुनियादी शिष्टाचार और तौर-तरीके मुस्लिम अरबों से सीखे। इस कारण मुस्लिम समुदाय में उनके धर्मान्तरण का मार्ग खुल गया। जायदी (Zayds) लोग भी आप्रवासियों के रूप में ग्रेट लेक्स आ गए थे; इस्लामी प्राधिकारी के रूप में उलेमा का उभार हुआ और कादी को धार्मिक प्राधिकारियों के रूप में स्वीकृति मिली। ग्रेट लेक्स क्षेत्र में इस्लाम धर्म के विकास के मामले में ये मील के कुछ पत्थर हैं।

पूर्व और दक्षिण-पूर्व एशिया में इस्लाम : दक्षिण एशियाई देशों, खासतौर पर इण्डोनेशिया में इस्लाम सातवीं शताब्दी में मक्का से आने वाले व्यापारियों के जरिये पहुँचा। यमन के अरब व्यापारी यूरोप और अफ्रीका के स्थलों की यात्राएँ समुद्र के जरिये किया करते थे। अफ्रीका, भारत और अनेक अन्य स्थानों से वे अरबी वस्तुओं के साथ-साथ अन्य वस्तुओं का व्यापार किया करते थे। उनके व्यापार की वस्तुओं में मुख्य रूप से हाथी-दाँत, सोना, मसाले और इत्र शामिल थे। कुछ ऐसे प्रमाण उपलब्ध हैं जो बताते हैं कि अरब व्यापारी हिन्द महासागर से होते हुए श्रीलंका (सीलोन) से भी व्यापार किया करते थे। सूफी मिशनरियों ने अरबी और फारसी के सूफी साहित्य का मलय भाषा में अनुवाद करना शुरू किया। इसका परिणाम यह हुआ कि मलय का झुकाव इस्लाम की तरफ हो गया और अधिकांश निवासी धर्मान्तरित हो गए। व्यापार और वाणिज्य के जरिये इस्लाम की जड़ें बोर्नियो और जावा तक पहुँच गयीं। फिलीपीन्स में इस्लाम का उभार पन्द्रहवीं शताब्दी में हुआ। पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी एशिया में तीन महत्वपूर्ण मुस्लिम सल्तनतों का उभार हुआ, जिनके नाम थे : एसेह सल्तनत, जिसका नियन्त्रण दक्षिण-पूर्व एशिया और भारत के बीच पड़ने वाले भौगोलिक क्षेत्र पर था और सुमात्रा इसका केन्द्र था; मलक्का की सल्तनत, जिसका नियन्त्रण मलय प्रायद्वीप पर था और डेमाक सल्तनत, जिसने जावा में शासन किया था।

भारतीय उपमहाद्वीप में इस्लाम : भारत में सबसे पहले इस्लाम केरल में अवतरित हुआ। आख्यानों के मुताबिक, मालाबार तट पर सहाबा का एक समुदाय मौजूद था जो इस्लाम में आस्था रखता था। इसी जगह पर भारत की सबसे पहली मस्जिद का निर्माण करवाया गया था। यह निर्माण चेर राजा चेरामन पेरुमल ने करवाया था जिन्होंने बाद में इस्लाम स्वीकार कर लिया और अपना नाम बदलकर ताजुद्दीन रख लिया। आठवीं शताब्दी तक मुहम्मद बिन कासिम ने सिन्ध पर अधिकार कर लिया था जबकि बारहवीं शताब्दी के दौरान इस्लाम का विस्तार महमूद गजनवी ने किया। कुतुबुद्दीन ऐबक ने सन् 1206 ई. में दिल्ली की गद्दी सँभाली और यह दिल्ली सल्तनत का प्रारम्भिक काल था। चौदहवीं शताब्दी में अलाउद्दीन खिलजी ने इस्लाम का विस्तार गुजरात, राजस्थान और दकन में किया। तेरहवीं से अठारहवीं शताब्दियों के मध्य भारत में अनेक ऐसे राजवंश हुए जिन्होंने मुस्लिम शासन के विस्तार में अपना योगदान दिया किन्तु इस मामले में मुगल लाजवाब थे। मुगलों ने इस्लाम को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ अनेक प्रभावशाली स्मारकों, बागों, राजत्व-प्रतिमानों और अनेक अन्य रूपों में अपना उल्लेखनीय योगदान दिया।

बोध प्रश्न 3

1) खलीफा से आप क्या समझते हैं?

....

....

....

....

....

2) इस्लाम के विस्तार पर एक टिप्पणी लिखिए।

....

....

....

....

....

9.8 सारांश

"बिजेण्टाइन" शब्द की उत्पत्ति बिजेण्टियम शब्द से हुई है जिसका प्रयोग बाइजस नामक व्यक्ति द्वारा स्थापित की गयी एक प्राचीन यूनानी बस्ती को निर्दिष्ट करने के लिए किया जाता था। यह बास्पोरस जलसन्धि के पास यूरोप की तरफ अवस्थित था। बास्पोरस जलसन्धि का प्रयोग एशिया और यूरोप के बीच व्यापार के लिए यातायात के एक महत्वपूर्ण बिन्दु के रूप में किया जाता था। जस्टीनियन प्रथम बिजेण्टाइन साम्राज्य का प्रथम शासक था। उसने 527 ई. से 565 ई. तक शासन किया था। उसके शासनकाल में जस्टीनियन सेना ने पश्चिमी रोमन साम्राज्य के भूक्षेत्रों पर अधिकार कर लिया था। उसका साम्राज्य उत्तरी अफ्रीका तक विस्तृत था। दसवीं शताब्दी के अन्तिम और ग्यारहवीं शताब्दी के प्रारम्भिक समय को इतिहासकारों ने बिजेण्टाइन साम्राज्य के स्वर्णकाल के रूप में व्याख्यायित किया है।

इकाई में धर्मयुद्धों के प्रारम्भ, ईसाइयत और इस्लाम के प्रसार पर भी चर्चा की गयी है। यह सत्य है कि इस्लाम का उद्‌भव रेगिस्तान में हुआ लेकिन इसका विकास अरबी संस्कृति में हुआ। इस्लाम में संस्कृति का प्रसारण इनके काव्यात्मक और वर्णनात्मक साहित्य के माध्यम से घटित हुआ। इस साहित्य का इस्लामी सभ्यता पर बहुत गहरा प्रभाव है और इसकी जड़ें शिक्षा को महत्व प्रदान करने में निहित हैं। इस्लाम ने कला और स्थापत्य के क्षेत्र में भी अपना योगदान दिया। मक्का की हरम मस्जिद, येरुशलम में अवस्थित अल-अक्सा की मस्जिद, दमिश्क की महान उमय्यद मस्जिद, इस्तानबुल की नीली मस्जिद और स्पेन की कार्डोबा मस्जिद उन भव्य स्मारकों में शामिल हैं जिन्हें मुस्लिम स्थापत्य की उत्कृष्टतम कृतियाँ माना जाता है। इसके अतिरिक्त, नीले और हरे रंग से चित्रित की गयी प्रभावशाली ज्यामितीय आकृतियाँ (Designs) भी मुस्लिमों के उल्लेखनीय योगदानों में शामिल हैं। "मशराबिया" के रूप में लकड़ी पर की गयी नक्काशी ने कला के क्षेत्र में मुस्लिमों को एक विशिष्ट पहचान दी। मुस्लिमों ने अपनी खोजों का विस्तार संगीत के क्षेत्र में भी किया। उन्होंने नवीन वाद्य-यन्त्रों और ध्वनियों की नयी तकनीकों का विकास किया। उन्होंने गणितीय विज्ञानों के साथ संगीत के सामंजस्य को स्थापित करके उसे समक्रमिक बनाने का भी विकास किया।

9.9 शब्दावली

लटकता हुआ (**Pendentive**): स्थापत्य : पेण्डेण्टिव निर्माण की एक युक्ति है जो आयताकार कमरे के ऊपर दीर्घवृत्ताकार गुम्बद के या वर्गाकार कमरे के ऊपर वृत्ताकार गुम्बद के निर्माण की सुविधा प्रदान करती है।

मूत्र-विश्लेषण (यूरोस्कोपी) : किसी रोगी के मूत्र का देख-परखकर परीक्षण करने का चिकित्सकीय कार्य।

परलोक-विद्या (**Eschatology**) : धर्मशास्त्रीय अध्ययन की वह शाखा जो मृत्यु, जगत के अन्त, निर्णय, आत्मा और मानवता की अन्तिम नियति जैसी अन्तिम चीजों से सम्बन्धित होती है।

क्रिस्टोलॉजी : अधिकांश ईसाइयों का मानना था कि जीसस एक स्वर्गिक आत्मा थे जिन्होंने एक मनुष्य के रूप में इस पृथ्वी पर ईश्वर के अनोखे दूत के रूप में अवतार लिया था।

विश्राम का समय (**Sabbath**): विश्राम का समय (sabbath) एक धार्मिक संस्कार है जिसे सप्ताह के किसी भी दिन किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, यहूदी लोग अपना विश्राम का समय शनिवार को मनाते हैं जबकि ईसाई लोग रविवार को विश्राम के समय का दिन मानते हैं।

9.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) भाग 9.2 देखिए।

2) उप-भाग 9.2.3 देखिए।

3) उप-भाग 9.2.4 देखिए।

बोध प्रश्न 2

1) भाग 9.3 देखिए।

2) भाग 9.3 देखिए।

3) भाग 9.4 देखिए।

बोध प्रश्न 3

1) भाग 9.5 देखिए।

2) भाग 9.7 देखिए।

इस खंड के लिए उपयोगी कुछ पुस्तकें और शोध प्रत्र

ए. फारूकी "अर्ली सोशल फॉर्मेशन्स" - मानक, दिल्ली - 2001।

ए.एल. राउज़ "दि यूज़ ऑफ़ हिस्ट्री" - 1971।

कॉलिंगवुड "दि आइडिया ऑफ़ हिस्ट्री" - ऑक्सफोर्ड, 1073।

मेसेल्स "अर्ली सिविलाइजेशंस ऑफ़ दि ओल्ड वर्ल्ड" - बिजनेस बुक्स कम्युनिका, 1978।

निस्बेट "सोशल चेंज एण्ड हिस्ट्री" - ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1972।

टी. वाल्टर वालबैंक "सिविलाइजेशंस पास्ट एण्ड प्रेज़ेण्ट" - स्कॉट फोर्समैन, लन्दन, 1978।

प्रेट्जलर, एम. (2007) पॉसेनियस : ट्रैवेल रायटिंग इन एंशियंट ग्रीस; लन्दन : डकवर्थ।

सी. कूपर, जे. फ्लेचर, ए. फियाल, डी. गिल्बर्ट, एस. वानहिल, 2008; टूरिज्म : प्रिंसिपिल्स एण्ड प्रैक्टिस, चौथा संस्करण, प्रैण्टिस हॉल।

फोका, आई. एण्ड वालावानिस, पी. (1999) रीडिस्कवरिंग एंशियंट ग्रीस : आर्कीटेक्चर एण्ड सिटी प्लानिंग, तीसरा संस्करण, एथेन्स : केड्रोस बुक्स।

गेल्डार्ड, आर. जी. (1989) द ट्रैवेलर्स की टू एंशियंट ग्रीस (ए गाइड टू द सैक्रेड प्लेसेज़ ऑफ़ एंशियंट ग्रीस), लन्दन : हर्रप कोलम्बस।

रॉब डेविडसन : टूरिज़्म : लन्दन, 1993।

रॉबर्ट क्रिटी मिल : टूरिज्म सिस्टम : न्यू जर्सी, 1992।

डोनाल्ड लुण्डबर्ग : टूरिस्ट बिजनेस, न्यूयॉर्क, 1990।

डेविड डब्ल्यू. होवेल : पासपोर्ट : ऐन इण्ट्रोडक्शन टू द ट्रैवेल एण्ड टूरिज़्म : ओहायो, 1989।

स्कुलियन, एस. (2007) "पिलग्रिमेज" एण्ड ग्रीक रिलीजन : सैक्रेड एण्ड सेकुलर इन द पागन पोलिस; इन : जे. एल्सनर, एण्ड आई. रदरफोर्ड (सम्पा.), पिलग्रिमेज इन ग्रीको-रोमन एण्ड अर्ली क्रिश्चियन एण्टीक्विटी : सीइंग द गॉड्स (पृ. 111-120); ऑक्सफोर्ड। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

स्टार्क, डी.जे. (2009) रिलीजियस टूरिज्म इन रोमन ग्रीस। थीसिस एण्ड डिजर्टेशंस (कॉम्प्रिहेंसिव)। पेपर 951। ऑनलाइन उपलब्ध : <http://scholars.wlu.ca/cgi/ viewcontent.cgi?article=1950&context=etd.

टाउनर, जे. एण्ड वाल, जी. (1992) हिस्ट्री एण्ड टूरिज्म। एनल्स ऑफ़ टूरिज्म रिसर्च, 18, 71-84।

ब्रानिस्लाव रैबोटिए (2014) स्पेशल-परपज़ ट्रैवेल इन एंशियंट टाइम्स : "टूरिज्म" बिफोर टूरिज्म? पब्लिश्ड इन : एम. स्काकुन (सम्पा.), प्रोसीडिंग्स बुक ऑफ़ द सेकेण्ड बेलग्रेड इण्टरनेशनल टूरिज्म कॉन्फ्रेंस (बीआईटीसीओ 2014): थीमैटिक टूरिज्म इन ए ग्लोबल एनवायरमेण्ट : एडवाण्टेजेज़, चैलेंजेज़ एण्ड फ्यूचर डेवेलपमेण्ट्स (पृ. 99-114)। बेलग्रेड : कॉलेज ऑफ़ टूरिज्म।

ग्राबर्न, एन., एण्ड जाफरी, जे. (1991), इण्ट्रोडक्शन : टूरिज्म एण्ड द सोशल साइंसेज़। एनल्स ऑफ़ टूरिज्म रिसर्च, 18(1), 1-11।

इस खंड के लिए गतिविधियाँ

टिप्पणी : गतिविधियों के परिणामों पर अपने परामर्शदाता (काउंसलर) के साथ चर्चा कीजिए।

गतिविधि 1

अपने कुछ ऐसे मित्रों का पता लगाइए जो कहीं जाकर घूमने की इच्छा रखते हैं। यह जानने की कोशिश कीजिए कि ऐसा करने के पीछे उनका इरादा क्या है और उसके अनुसार कुछ गन्तव्य सुझाइए।

गतिविधि 2

साधारण मानचित्र की सहायता से चीन क्षेत्र का एक पर्यटन मानचित्र तैयार कीजिए।

गतिविधि 3

जहाँ आप रहते हैं, उस इलाके में या आसपास किसी ऐसे स्थल का पता लगाइए जो किसी ऐतिहासिक आकर्षण के कारण प्रसिद्ध हो। उस ऐतिहासिक इलाके में जाने की योजना बनाइए और इस चीज की सूची बनाइए कि वहाँ कौन-कौन से संसाधन और आधारभूत संरचनाएँ उपलब्ध हैं। इसके इतिहास और क्रमागत विकास के बारे में भी सूचनाएँ एकत्रित कीजिए।

गतिविधि 4

इस खण्ड से सम्बन्धित प्राचीन सभ्यताओं को विश्व मानचित्र में स्थान व फैलाव के साथ दर्शायें।

NOTES

NOTES